सौन्दर्य

डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली

अरविन्द प्रकाशन,
जोधपुर

रहस्य रोमांच

जीवन को झकझोर कर रख देने वाली

पुस्तक श्रंखला

एस-सीरिज

अद्भुत और सांस रोक कर पढ़ने योग्य ये छः पुस्तकें

प्रथम सीरिज

- तांत्रिक त्रिजटा अघोरी
- भुवनेश्वरी साधना
- अप्सरा साधना सिद्धि
- सिद्धाश्रम
- मैं बाहें फैलाए खड़ा हूं
- हंसा! उड़हूं गगन की ओर

प्रथम सीरिज ३०/- सेट
द्वितीय सीरिज ४०/- सेट

द्वितीय सीरिज

- सौन्दर्य
- तारा साधना
- जगदम्बा साधना
- तंत्र साधनाएं
- स्वर्ण सिद्धि
- उर्वशी साधना
- शिव साधना
- हिप्नोटिज्म

अरविन्द प्रकाशन,

डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज.)

टेली-०२९१-३२२०९

डॉ. नारायण दत्त श्रीमाली

अरविन्द प्रकाशन

डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी

जोधपुर (राजस्थान) - ३४२००१

फोनः ०२९१-३२२०९

© प्रकाशकाधीन

प्रकाशक : अरविन्द प्रकाशन
डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी
जोधपुर (राज.)-३४२००१,फोन:०२९१-३२२
संस्करण : १९९३
मूल्य : ५.०० (पांच रुपये)
मुद्रक : ताज प्रेस, ए.-३५/४,मायापुरी,दिल्ली

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान पत्रिका से साभार लेख

पुस्तिका में प्रकाशित किसी भी लेख या सामग्री के बारे में वाद-विवाद या तर्क नहीं होगा और न ही इसके लिए लेखक, प्रकाशक ,मुद्रक या संपादक जिम्मेवार होंगे। भी प्रकार के वाद-विवाद में जोधपुर न्यायालय ही मान्य होगा। पुस्तिकामें प्रकाशित कि सामग्री को साधक या पाठक कहीं से भी प्राप्त कर सकते हैं। पुस्तिका कार्यालय से मंगवा हम अपनी तरफ से प्रामाणिक और सही सामग्री अथवा यंत्र भेजते हैं, पर फिर भी उसवे में, असली या नकली के बारे में, अथवा प्रभाव या न प्रभाव होने के बारे में हमारी जिम् नहीं होगी। पाठक अपने विश्वास पर ही ऐसी सामग्री पुस्तिका कार्यालय से मंगवायें, के मूल्य पर तर्क या वाद - विवाद मान्य नहीं होगा। पुस्तिका में प्रकाशित किसी भी में सफलता-असफलता, हानि-लाभ आदि की जिम्मेवारी साधक की स्वयं की होगी तथा कोई ऐसी उपासना जप या मंत्र प्रयोग न करे जो नैतिक, सामाजिक एवं कानूनी निय विपरीत हो। पुस्तिकामें प्रकाशित एवं विज्ञापित आयुर्वेदिक औषधियों का प्रयोग पाठक जिम्मेवारी पर ही करें। दीक्षा प्राप्त करने का तात्पर्य यह नहीं है कि वह संबंधित लाभ तुरं कर सके, यह तो धीमी और सतत प्रक्रिया है, अतः पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ ही दीक्ष करें। किसी भी सम्बंध में किसी प्रकार की कोई आपत्ति या आलोचना स्वीकार्य नहीं होगी। या पुस्तिका परिवार इस सम्बंध में किसी प्रकार की जिम्मेवारी वहन नहीं करेंगे।

अनुक्रमणिका

दो शब्द

भारतीय ज्ञान-विज्ञान अपनी श्रेष्ठता और गहनता के कारण विश्व-विख्यात रहा, और भारतीय विद्याओं की महत्ता आज के वैज्ञानिक युग में भी दिन-प्रतिदिन स्पष्ट हो रही है किंतु यह खेद का विषय है कि यही ज्ञान-विज्ञान अपनी ही धरती पर उपेक्षित और व्यंग की दृष्टि से देखा जाता है, दृष्टिकोण में आए परिवर्तन के साथ-साथ भारतीय ज्ञान की दुरुहता भी एक प्रमुख कारण रही है क्योंकि इसे अपनी ही सम्पत्ति बनाए रखने के प्रयास में न केवल तोड़-मरोड़ की गई अपितु यह नीरस, जटिल और अस्पष्ट भी हो गया तथा समाज ऐसे साहित्य को भय-मिश्रित जिज्ञासा से देखने लग गया।

इस खेद-जनक स्थिति का समापन करने के लिए हमने एक प्रयास किया कि ज्ञान और साधना की सरस ढंग से प्रस्तुति हो और अरविंद प्रकाशन के द्वारा "एस सीरीज" में रोचक, तथ्यपरक व ज्ञान-वर्धक साहित्य का प्रकाशन आरम्भ किया। इसके प्रथम सेट के अंतर्गत् छह पुस्तकें प्रकाशित की गई- **तांत्रिक त्रिजटा अघोरी, भुवनेश्वरी साधना, हंसा उड़हूं गगन की ओर, मैं बाहे फैलाए खड़ा हूं, सिद्धाश्रम, एवं अप्सरा साधना एवं सिद्धि**। इस सेट की प्रत्येक पुस्तक अपने ढंग की विशिष्ट व रोचक रही। उदाहरण के लिए पाठक वर्ग ने पहली बार ही त्रिजटा अघोरी जैसे प्रबल व्यक्तित्व का परिचय पाया और 'सिद्धाश्रम' के नाम से विख्यात सिद्ध स्थली की प्रामाणिक जानकारी ली। पाठक वर्ग ने इस सेट का उत्साहपूर्ण ढंग से स्वागत किया और साधनात्मक साहित्य के क्षेत्र में व्याप्त जड़ता और नीरसता समाप्त करने का हमारा प्रयास सफल रहा। इन सभी पुस्तकों का आधार पूज्यपाद गुरुदेव से प्राप्त सूत्र एवं उनके गृहस्थ व सन्यस्त शिष्यों के प्रामाणिक अनुभव

रहे। अपने-आप में मौलिक व अनुभूत तथ्यों पर आधारित होने के कारण ही ये पुस्तकें जन मानस को गहरे तक जाकर न केवल छू सकीं वरन् उन्हें साधना के लिए भी नई चेतना प्रदान करने में समर्थ रहीं। ऐसा सब कुछ संभव होने में हमें कोई आश्चर्य नहीं रहा क्योंकि न केवल इन पुस्तकों के वरन् इन सभी शिष्यों के पीछे जो चैतन्य व्यक्तित्व है, जिनके ज्ञान और निर्देशन में इन सभी साधकों ने साधनाएं सम्पन्न कर सिद्धि पायी है, और अनेक रोमांचक अनुभव प्राप्त किए हैं (और जो इन पुस्तकों का आधार बने) उनका नाम है **डॉ० नारायणदत्त श्रीमाली जी** जो अपने सन्यासी शिष्यों के मध्य परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानंद जी के रूप में विख्यात हैं। एक ही व्यक्तित्व में ज्ञान की अनेक धाराएं समाहित देख कर वास्तव में आश्चर्यचकित रह जाना पड़ता है। पूज्यपाद गुरुदेव के व्यक्तित्व से जुड़ी सैकड़ों-हजारों, घटनाओं के आधार पर यदि उनके शिष्यों के अनुभव एकत्र किए जाएं तो वह एक विशाल ग्रंथ का आकार ले लेगा।

वर्तमान में हमने इसी विशाल ज्ञान-भंडार में से पाठकों की रुचि व हित को ध्यान में रखकर इस द्वितीय सेट का निर्माण किया है। जिसके अन्तर्गत् **जगदम्बा साधना, सौंदर्य, शिव साधना, उर्वशी, स्वर्ण सिद्धि, तारा साधना, तंत्र साधना एवं हिप्नोटिज्म,** शीर्षक से आठ पुस्तकें प्रकाशित की गई हैं। अपने लघु-कलेवर में भी प्रत्येक पुस्तक सम्बन्धित विषय से पूर्ण ज्ञान समेटे ही है साथ ही अत्यंत सहज और बोधगम्य शैली में--

हमें आशा है कि प्रथम सेट की ही भांति यह द्वितीय सेट भी पाठकों की रुचि के अनुकूल तथा जीवन में लाभ प्रदान करने में समर्थ होगा।

-- **प्रकाशक**

आधार है संसार का

सौन्दर्य शब्द अपने- आप में ही मन को छूने वाला, प्रसन्नता बढ़ाने वाला और जीवन में आनन्द भरने वाला है, संस्कृत में सौन्दर्य की परिभाषा दी गई है, जो क्षण-क्षण परिवर्तित होता हो, जो हर पल नवीन और आकर्षक लगता हो वही सौन्दर्य है, पुराणों में सौन्दर्य की विवेचना करते हुए कहा है **"जिसे देखते ही हृदय की धड़कन और नाड़ी का स्पन्दन रुक जाए वही सौन्दर्य है"**, प्रसिद्ध सौन्दर्य चिन्तक वराहमिहिर ने कहा है जो सीधे ही हृदय में उतर जाए वह सौन्दर्य है, प्रसिद्ध कवि कालीदास ने कहा है **"सारे संसार का आधार सौन्दर्य है"**।

वास्तव में ही प्रकृति में पुरुष, पशु, पक्षी, कीट, ंग आदि बने हैं, परंतु ये सभी तभी आकर्षक और ोहर लगते हैं, जब बगीचे में विकसित गुलाब झूम रहा , पेड़ की डाली पर कोयल पंचम स्वर से अलाप कर ो हो, और नारी पुरुष के सम्बन्धों में विधाता की ुपम देन युवती अपने पूर्ण सौन्दर्य के साथ खड़ी हो।

प्राचीन ग्रथों में कई स्थानों पर **"सौन्दर्य** **ा"** का उल्लेख आया है, जिसमें भगवान शिव ने र्वती से नारी के पूर्ण सौन्दर्य और उसकी सौन्दर्य-वृद्धि बारे में विस्तार से बताया है, यह पहली पुस्तक है समें सौन्दर्य की परिभाषा तो दी गई है, परंतु कुरूप ो को भी अत्यधिक आकर्षक सौन्दर्यमयी बनाने का धान भी इस ग्रंथ में प्रामाणिकता के साथ दिया गया और इस ग्रंथ की रचना के बाद ही भगवान शिव को **ैद्यनाथ"** नाम से सम्बोधित किया गया।

इस पुस्तक की खोज में सैकड़ों सन्यासी, न्दर्य पारखी, और वैद्य भटकते रहे, जंगलों की खाक नते रहे, और आस-पास के देशों में भी इस पुस्तक खोज की, पर यह पुस्तक मिली प्रसिद्ध सौन्दर्य पारखी र रसिक कवि बाणभट्ट को, उसने उस पुस्तक को ा कर कहा-मेरे जीवन का सारा परिश्रम सार्थक हो

गया, और पढ़ने के बाद उसने कहा यह एक अद्वि
कृति है, और आने वाले समय में इसका महत्व और म
भारतीय मुद्रा में आंका ही नहीं जा सकेगा।

उसके बाद यह पुस्तक लगभग गोपनीय
इसकी एक मात्र हस्तलिखित प्रति के बारे में लोगो
विचार अलग-अलग थे, अंग्रेजी काल में बकायदा सो
सदस्यों की एक टीम बनाई गई, जिसका एक मात्र उ
इस हस्तलिखित पुस्तक की खोज करना था, और प्र
करना था, इसके अध्यक्ष मि० एवेरण्ड मूर थे, जो प्रा
ग्रंथों के प्रामाणिक विद्वान और विवेचक थे, इस
में आठ भारतीय विशेषज्ञ थे, और आठ अंग्रेज

लगभग तीन वर्षों तक यह टीम पूरे भारत
में भटकती फिरी, और इस पुस्तक को प्राप्त करने
प्रयत्न करती रही, शायद ही कोई ऐसी जगह छूटी
जहां पर यह टीम नहीं गई, आखिर तीन साल बाद
टीम को सफलता मिली, जब वे तिब्बत के "ल्हान"
के प्रसिद्ध बौद्ध मठ में पुहंचे, यह बौद्धमठ दुर्गम पह
पर बना हुआ अत्यन्त ही प्रसिद्ध था, कहा जाता है
यहां कई हजार वर्ष पुरानी पुस्तकें भी संग्रहित हैं,
पर धन बल से और सत्ता बल से एवेरण्ड मूर ने
पुस्तकालय को छान मारा, और जब उन्हें लाल व

में लिपटी यह हस्तलिपि प्रति मिली तो वे खुशी से नाच उठे, यह बाणभट्ट के हाथों से ही लिखी हुई, प्रामाणिक प्रति थी।

मूर ने बड़ी हिफाजत के साथ यह पुस्तक उस समय की तत्कालिक इंगलैण्ड की रानी को एक विशेष समारोह में भेंट की, और पुस्तक के बारे में संक्षिप्त रूपरेखा बताई।

पर आश्चर्य की बात यह है कि बाद में यह पुस्तक रहस्यमय तरीके से, इतनी हिफाजत के बाद भी इंगलैण्ड के ग्रंथागार से चोरी चली गई, और तब से अब तक इसका कोई पता नहीं चला, पर इस छोटी सी घटना से यह स्पष्ट हो गया कि यह पुस्तक अपने- आप में कितनी अधिक मूल्यवान है।

जब आठ करोड़ में यह पुस्तक बिकी

पिछले दिनों अमेरीका के प्रसिद्ध अखबार में एक महत्वपूर्ण समाचार प्रकाशित हुआ कि मात्र एक सौ अट्ठाईस पृष्ठों की पुस्तक आठ करोड़ डालर में बिकी, और इससे पुनः सारे संसार में हलचल हुई, जो प्राचीन विद्या के जानकार हैं, जो सौन्दर्य पारखी और सौन्दर्य विशेषज्ञ हैं, वे इस पुस्तक का महत्व और मूल्य जानते हैं, इस पुस्तक के प्रत्येक पृष्ठ पर एक-एक महत्वपूर्ण

औषधि और कल्प का विवरण दिया हुआ है, जिसके द्वारा सर्वथा कुरूप और असुन्दर स्त्री को भी अद्वितीय सौन्दर्यशालिनी बनाया जा सकता है, इस पुस्तक में जिन लेखों और औषधियों का विवरण- वर्णन है, वे आज भी प्राप्य हैं। इस पुस्तक में उन औषधियों के निर्माण की प्रामाणिक विवेचना की गई है जिसके द्वारा पूरे संसार को सुंदर बनाया जा सकता है।

पुस्तक के खरीददार अमेरिकी अरबपति मि० हिल ने पुस्तक खरीदने के बाद कहा "आज मैंने एक **महत्वपूर्ण सौदा किया है, और मैं इस पुस्तक के द्वारा वापिस अरबों रुपये कमा सकता हूं,** उन्होंने भी सभा में गर्व के साथ कहा- मैं पहला व्यक्ति हूं जो इस पृथ्वी पर से असुन्दरता को मिटाने में समर्थ हूं, अब संसार में कोई भी स्त्री असुंदर नहीं रह सकती, क्योंकि **सौन्दर्य का आधार ही सृष्टि है, और सृष्टि का आधार ही सौन्दर्य है, बिना सौन्दर्य के यह सारी सृष्टि फीकी-फीकी और नीरस हैं।**

पिछले वर्ष जब पूज्य गुरुदेव अमेरिका गए तो उनके मानस में यह बात स्पष्ट थी कि वे इस पुस्तक को एक बार देखें, और यथासम्भव हो सके तो उसकी प्रतिलिपि प्राप्त करें।

मेधा शक्ति

यह एक विशिष्ट साधना है, जिसके द्वारा कोई भी ग्रंथ या पुस्तक को यदि एक बार पढ़ लिया जाए, तो वह पूरी पुस्तक मस्तिष्क में अंकित हो जाती है, कहते हैं कि राजा भोज के दरबार में तीन ऐसे विद्वान थे, जिन्हें मेधा साधना सिद्ध थी, राजा भोज ने यह ऐलान कर रखा था कि जो भी दरबार में आकर सर्वथा नवीन श्लोक सुनाएगा उसे एक लाख स्वर्ण मुद्राएं पारितोषिक के रूप में दी जाएंगी।

कवि परिश्रम करके श्लोक बनाकर राजा भोज के दरबार में ले जाते, और वह कवि या ब्राह्मण ज्योंही श्लोक बोलता, तो एक मेधा साधना सम्पन्न पंडित उठ खड़ा होता और कहता कि यह श्लोक तो पुराना है, और हमने पहले ही सुन रखा है, और उसी साधना के बल पर, वह उस श्लोक को ज्यों का त्यों वापिस दोहरा देता, इससे वह आगन्तुक कवि या पंडित लज्जित हो उठता और अपमानित हो कर उसे दरबार से जाना पड़ता।

यह मेधा साधना अपने-आप में अद्वितीय साधना है, ऐसी साधना सिद्ध करने पर सरस्वती स्वयं कंठ में विराजमान हो जाती है, और साधक अगर किसी ग्रंथ को एक बार पढ़ लेता है तो वह पूरा का पूरा ग्रंथ उसके

मस्तिष्क में अंकित हो जाता है, और फिर साल दो साल बाद भी वह उस ग्रंथ को वापिस दोहरा सकता है, कागजों पर उतार सकता है।

और जब वह सौन्दर्य तंत्र देखा

जैसा कि मैं पीछे लिख चुका हूं कि पूज्य गुरुदेव जब अमेरिका गए तो उनके मानस में यह चिन्तन था कि भारत की इस प्राचीन और अद्वितीय पुस्तक का जब पता चल ही गया है तो क्यों ने किसी न किसी प्रकार से मि० हिल से मिला जाए और इस पुस्तक का अवलोकन किया जाए, यद्यपि उनका कार्यक्रम वहां पर अत्यधिक व्यस्त था, परन्तु फिर भी उन्होंने अपने एक परिचित अमेरिका के प्रसिद्ध बैंक के मालिक मि० ऐवर को यह बात कही, मि० ऐवर गुरुदेव के शिष्य हैं, और उनके मन में गुरुदेव के प्रति अत्यधिक स्नेह और सम्मान है, मि० ऐवर ने कहा "मैं हिल को जानता हूं और कोशिश करता हूं कि आप दोनों की मुलाकात हो जाए"।

उन्होंने प्रयत्न किया उन दिनों हिल अपने व्यापारिक कार्य से जर्मनी गए हुए थे, जब वहां से लौटे तो ऐवर ने बातचीत की, और मिलने की तारीख और समय निर्धारित कर ली।

चर्चा **"सौन्दर्य तंत्र"** पर चल निकली, और चर्चा के दौरान मि० हिल ने कहा वास्तव में ही यह पुस्तक भारतीय विद्याओं की सर्वश्रेष्ठ पुस्तक है। इस पुस्तक के माध्यम से ही चिकित्सा क्षेत्र में तहलका मचाया जा सकता है, इस पुस्तक में सौन्दर्य के इतने सूक्ष्म लेख और औषधियां बताई गई हैं कि जिसकी तुलना नहीं की जा सकती।

बातचीत के समापन में उन्होंने कहा "मैं मूल प्रति तो दिखाने में असमर्थ हूं क्योंकि वह अत्यधिक सुरक्षित स्थान पर पड़ी हुई है, पर उसकी प्रामाणिक फोटो स्टेट प्रतिलिपि आपको पांच - दस मिनट के लिए दिखा सकता हूं।

इसके लिए मि० ऐवर ने फिर प्रयत्न किया, और सप्ताह भर बाद का ही समय निर्धारित कर लिया।

एक सप्ताह बाद अमेरिका के प्रसिद्ध होटल हिल्टन में मुलाकात हुई, और वहां उन्होंने सौन्दर्य-तंत्र की वह प्रति दिखाई जो अभी तक पूरे संसार के लिए अज्ञात है, वास्तव में ही यह पुस्तक अद्वितीय है, इसका एक-एक श्लोक हीरे, मोतियों से तोलने लायक है, समय मात्र दस मिनट दिया गया था, और इन दस मिनटों में ही मेधा साधना के सहारे पूरी पुस्तक को टटोलना था,

और उन्होंने तीक्ष्ण दृष्टि से पुस्तक में वर्णित श्लोकों को, उसकी पाद टिप्पणियों को और उसके अन्वय को पढ़ना शुरू किया, ऐसा प्रतीत हो रहा था कि वह पुस्तक पढ़ नहीं रहे हैं बल्कि निगल रहे हैं, और निर्धारित दस मिनट की अवधि में ही उन्होंने पूरे १२८ पृष्ठों को टिप्पणियों, अन्वय को पूर्ण सूत्रों के साथ पढ़ लिया।

"बाद में एक प्रवचन के दौरान पूज्य गुरुदेव ने कहा, यह पुस्तक वास्तव में ही सौन्दर्य शास्त्र की दृष्टि से अद्वितीय है, इस पुस्तक के माध्यम से सर्वथा असुंदर, कुरूप और बेढब स्त्री को भी संसार की श्रेष्ठ सौन्दर्यमयी तरुणी बनाया जा सकता है। इस पुस्तक में वर्णित औषधियों के सहारे वृद्धावस्था को पूर्ण यौवनावस्था में बदला जा सकता है। बिना प्लास्टिक सर्जरी की तकलीफ उठाए इस पुस्तक के द्वारा चेहरे को आकर्षक और अद्वितीय सौन्दर्य युक्त बनाया जा सकता है, सारे शरीर को सौन्दर्य के मापदण्डों के आधार पर उचित आकार एवं अनुपात दिया जा सकता है तथा शरीर के समस्त रोगों को मिटाया जा सकता है, दूसरे शब्दों में कहा जाए तो यह पुस्तक सारे संसार में तहलका मचाने के लिए पर्याप्त है।"

हाँ!

हम चिर युवा बने रहे सकते हैं

कायाकल्प कोरी कल्पना नहीं है अपितु अब यह पूर्ण रूप से सम्भव प्रतीत होता है। प्राचीन शास्त्रों में और आयुर्वेद के ग्रंथों में कायाकल्प की अनेक विधियां प्रचलित थीं। काल के प्रवाह में धीरे-धीरे वे विधियां लुप्त होती चली गईं। आज भी भारत में और विदेशों में डाक्टर बुढ़ापा रोकने के लिए प्रयत्नशील हैं, और अब वे उस स्थिति तक पहुंच गए हैं जबकि वे मनुष्य का कायाकल्प कर उसे पुनः जवान, स्वस्थ और चुस्त बना सकते हैं।

विदेशों में इस सम्बन्ध में काफी प्रयोग प्रचलित हैं। स्विट्जरलैंड में डाक्टर मि० पाल निहांस ने अपने कोशिकोपचार विधि से असंख्य लोगों को बुढ़ापे से यौवन की ओर अग्रसर किया है। इनकी मान्यता यह है कि मनुष्य वृद्ध नहीं होता अपितु

उसके शरीर में जो कोशिकाएं होती हैं, वे धीरे-धीरे कमजोर हो जाती हैं, और उनके कमजोर होने से ही त्वचा में सिकुड़न तथा चेहरे पर झुर्रियां बनने लगती हैं। यदि इन कोशिकाओं को हटा कर इनके स्थान पर नवीन और ताजा कोशिकाएं स्थापित कर दी जाएं, तो व्यक्ति पुनः यौवन प्राप्त कर सकता है। इसके द्वारा किए गए उपचार से मनुष्य शरीर में आश्चर्यजनक परिवर्तन दिखाई देता है, उसकी त्वचा ताजी और चमकदार हो जाती है, चेहरे की झुर्रियां और शरीर की सलवटें दूर हो जाती हैं तथा मन में एक विशेष वेग और यौवन का उन्माद छा जाता है। यही नहीं, अपितु उसमें पुनः काम-वासना और काम सुख प्राप्त करने की क्षमता पैदा हो जाती है। डा० निहान्स अब तक लगभग हजारों लोगों को पुनः यौवन प्रदान करने में सफल हुए हैं।

इन कोशिकाओं को पुनः स्थापित करने में मनुष्य की कोशिकाएं तो प्राप्त नहीं होती थीं, अतः डा० निहान्स ने वन-मानुष और अन्य जानवरों की कोशिकाएं मनुष्य के शरीर में स्थापित कर उन्हें पूर्णतः सक्षम और यौवनवान बनाया है।

डा० निहान्स ने अविकसित मस्तिष्क वाले युवकों के दिमाग से रोगयुक्त कोशिकाएं निकाल कर ताजे मेमने की कोशिकाएं स्थापित की जिससे वे व्यक्ति पूर्णतः मानसिक रूप से स्वस्थ हो गए। इसी प्रकार उन्होंने लकवे से पीड़ित एक युवती

के शरीर में स्वस्थ वनमानुष की कोशिकाएं स्थापति कर उसे हमेशा-हमेशा के लिए रोग मुक्त करने में सफलता प्राप्त की।

डा० निहान्स एक अंग की कोशिकाएं स्थापित करने की फीस १५०० डालर लेते हैं। बारहवें पोप को सफलतापूर्वक नवयौवन प्रदान करने के बाद तो डा० निहान्स की चर्चा पूरे विश्व में होने लगी। आज डा० निहान्स संसार के सबसे व्यस्त व्यक्ति कहे जाते हैं। प्रसिद्ध उपन्यासकार सामरसेट माम ने भी डा० निहान्स से अपना कायाकल्प कराया था, जिसके बाद वे ८० वर्ष के होते हुए भी तीस वर्ष के लगने लगे थे।

इसी प्रकार अमेरिका के डा० स्टीनाक ने भी इस विधि में विशेष सफलता प्राप्त की है। उन्होंने एक दुबले-पतले ८० वर्ष के वृद्ध के शरीर में बकरे की कोशिकाएं स्थापित कर उसे इतना अधिक सक्षम बना दिया था कि उसने कायाकल्प होने के बाद चार बच्चों का बाप बनने में सफलता प्राप्त की।

रूमानिया की डा० ऐना असलन आज कल विशेष सम्मान और प्रसिद्धि प्राप्त डाक्टर हैं। इन्होंने अपनी विधि से व्यक्ति को पूर्ण यौवन प्रदान करने में सफलता प्राप्त की हैं। इस डाक्टर ने निकिता खुश्चेव, फील्ड मार्शल मांटगुमरी, अमरीका के उप राष्ट्रपति हेनरी वालेस जैसे महा व्यक्तियों का काल्या कल्प कर अभूतपूर्व सफलता प्राप्त की है। डा० असलन

ने इण्डोनेशिया के भूतपूर्व राष्ट्रपति सुकर्ण तथा वियतनाम के पिता हो-ची-मिन्ह को भी कायाकल्प करा कर पूर्ण यौवन प्रदान करने में सफलता पाई है। इनकी विधि से गठिया, गंजापन, त्वचा की झुर्रियां, अपचन, हृदय रोग, बहरापन आदि से पीड़ित व्यक्तियों का भी उपचार हो जाता है। डा० असलन ने सौ वर्ष से अधिक आयु के एक रूसी वृद्ध का कायाकल्प कर उसे तीस वर्ष के युवक के समान बना दिया था, और वह एक सौ उन्नीस वर्ष की आयु तक जीवित रहा।

वर्तमान डाक्टरों में डा० जेड का नाम प्रसिद्ध है। उन्होंने अमरीका के राष्ट्रपति जान कैनेडी को रोग मुक्त करके उनकी काम भावना को पराकाष्ठा पर पहुंचा दिया था। रूमानिया की ही डा० क्रिस्टीन ने कई लोगों को पूर्ण यौवन प्रदान करने में सफलता प्राप्त की है। उन्होंने ६० वर्षीया एक वृद्ध महिला तथा हालीवुड की विख्यात अभिनेत्री कीन का कायाकल्प कर उन्हें पूर्ण यौवनवान बना दिया है। ६० वर्षीया महिला का चेहरा इतना सुंदर और चिकना बन गया है, आंखों में इतनी चमक और सुन्दरता आ गई है कि ऐसा लगता है मानो वह बुढ़िया २० वर्ष की बालिका हो। केवल हाथ की झुर्रियां देख कर ही कोई अनुमान लगा सकता है कि वह

वृद्ध महिला है। इसी विधि से कीन के सिर पर काले बाल उग आए हैं तथा चेहरे पर भोलापन तथा सलोनापन आ गया है। पांच वर्ष के बाद भी उसके चेहरे पर किसी प्रकार की कमी, रूखापन या सलवटें नहीं आई हैं। डा० क्रिस्टीन की मान्यता है कि वृद्धावस्था चिन्ता और परेशानियों से ही आती है, क्योंकि चिन्ताओं से शरीर में प्रोटीन निर्माण में बाधा पड़ती है और इस प्रकार डी० एन० ए० अणु कोशिकाओं में शिथिलता आने लगती है। जब ये कोशिकाएं शिथिल होती हैं तो ये बूढ़ी कोशिकाएं स्वयं तो आदमी को बूढ़ा बनाती हैं, नयी कोशिकाओं को भी गलत ढंग से प्रेरित करती हैं, जिसके कारण कई प्रकार के रोग और कमजोरियां शरीर में छाने लगती हैं।

पाश्चात्य देशों के अलावा भारत में भी इस सम्बन्ध में प्रयोग और परीक्षण हो रहे हैं, यद्यपि वैज्ञानिक तरीके से भारत में कार्य नहीं हो पा रहा है। हमारे आयुर्वेद ग्रंथों में कायाकल्प की अनेक विधियां प्रचलित हैं। सर्वप्रथम महर्षि च्यवन ने इस प्रकार की विधि का प्रयोग किया था। स्वयं शंकराचार्य ने इसी विधि से १०० वर्ष के एक सन्यासी का कायाकल्प किया था, और वह २० वर्ष के समान लगने लगा था।

यह विधि **'कायाकल्प'** नामक एक प्राचीन हस्तलिखित प्रति में उपलब्ध है। लेखक को यह ग्रंथ देखने को मिला था, और उसमें लिखी हुई विधियों में से कुछ विधियों का प्रयोग लेखक ने सफलतापूर्वक वृद्ध व्यक्तियों पर किया था।

इस पुस्तक में कुल १२ विधियां हैं। प्रथम चार विधियों में आयुर्वेद औषधियों का प्रयोग किया जाता है। अगली चार विधियों के अंतर्गत् रसायन के माध्यम से कायाकल्प किया जाता है। शेष चार विधियां तांत्रिक प्रयोगों से सम्बन्धित हैं। लेखक ने इसमें से आठ विधियों पर सफलतापूर्वक प्रयोग किया है।

लेखक ने एक वृद्ध का कायाकल्प करके यह सिद्ध किया है कि वर्तमान युग में पाश्चात्य डाक्टरों ने जो विधियां स्पष्ट की हैं, वे अधिक प्रामाणिक नहीं हैं क्योंकि उन विधियों का प्रभाव कुछ समय तक ही रहता है। भारतीय विधि से जो कायाकल्प किया जाता है, उसका प्रभाव दीर्घकालीन होता है।

नीचे मैं कायाकल्प से सम्बन्धित एक विधि स्पष्ट कर रहा हूं --

कायाकल्प विधि

हिमालय या पर्वतीय प्रदेशों में देवदार के बड़े-बड़े वृक्ष देखने को मिलते हैं। इनमें से किसी बड़े

मोटे तने वाले देवदार के पेड़ को काट दें और मात्र सात फुट का तना रहने दें।

इसके बाद इस तने को खोखला बना दें। इस बात का ध्यान रक्खें कि पेड़ की जड़ें जमीन में बनी रहें।

इसके बाद उस खोखले तने में जटामाँसी, सत्यानाशी, बड़कथूरा, सीरवी के बीज, गीता गामी, पचबहेड़ा, थूहरथला, पट्टाकांसी तथा गेमाला के बीज बराबर-बराबर ले कर उस खोखले तने में डाल दें। ऊपर से देवदार के तने से निकला हुआ गूदा डाल दें और ऊपर तक भर दें।

इसके बाद तने के चारों ओर गीला कपड़ा मुल्तानी मिट्टी से भिगोकर दोहरा-तेहरा लपेट दें। मुंह के ऊपर भी कपड़े की डाट भली प्रकार से लगा दें।

इसके बाद तने में चारों ओर आग लगा दें। तने के अन्दर की सामग्री को धीमी आंच में छः घंटे तक पकाते रहें।

इसके बाद डाट हटाकर और तने को काट कर अंदर की सामग्री (जो लगभग गूदे के समान हो जाती है) निकाल लें।

इस गूदे को कांसे की थाली में सौ बार पानी से धो लें, फिर उसे शुद्ध बर्तन में रख लें। नित्य पांच तोला, चौदह दिन तक इसका सेवन करें। इस अवधि में

अन्य किसी भी प्रकार का भोजन न करें, और न कोई कार्य ही करें। पूरी तरह से आराम आवश्यक है। इन दिनों धूप में नहीं रहना चाहिए।

बारहवें दिन शरीर की त्वचा सांप के केचुल की तरह उतर जाती है, और नवीन त्वचा शरीर पर आ जाती है। नवीन त्वचा बिना झुर्रियों की, चिकनी, मुलायम और चमकदार होती है। आंखों की रोशनी बढ़ जाती है, सिर पर घने और काले बाल उगने लगते हैं। काम-वासना पूरी तरह प्रदीप्त हो जाती है। शरीर के रोग मिट जाते हैं और मस्तिष्क पूरी तरह से कार्य करने लग जाता है। लेखक ने कई व्यक्तियों पर इस विधि का सफल प्रयोग किया है। जो प्रयोग आज से ३० वर्ष पूर्व किया गया था उसका प्रभाव आज भी वैसा का वैसा है। वास्तव में ही भारत में कायाकल्प की जो विधियां हैं, वे अपने-आप में पूर्णतः प्रभावशाली हैं। इसका प्रयोग आप अपनी जिम्मेदारी अथवा किसी वैद्य की सलाह से ही करें।

सौन्दर्यवती बनना भी ईश्वर की आराधना है

आयुर्वेद में भीषक का नाम अत्यन्त ही आदर एवं सम्मान के साथ लिया जाता है, उन्होंने अपने जीवन में जो प्रयोग किए, वे अपने-आप में अद्वितीय और प्रभावयुक्त थे, आयुर्वेद के क्षेत्र में उनके ऋण को हम आज भी स्वीकार करते हैं।

वैद्यराज (हर प्रधान योगी) प्रामाणिक, अनुभवी एवं वृद्ध वैद्य हैं, उन्होंने भीषक के ग्रंथ को खोज निकाला है, और उसके आधार पर उन्होंने जो प्रयोग किए हैं, उनमें शत-प्रतिशत सफलता मिली है, अपने जीवन काल में लगभग ३०० से ज्यादा स्त्रियों पर

उन्होंने आयुर्वेद प्रयोग किए हैं, और सभी में उन्हें पूर्णतः सफलता मिली है।

उनके ये अनुभव पत्रिका में देते हुए हमें गर्व हो रहा है, भविष्य में भी हम उनके अनुभवों का लाभ पत्रिका पाठकों को प्रदान कर सकेंगे।

पुरुष का सौन्दर्य जहां पौरुषता, कर्मठता और प्रबलता है, वहीं स्त्री का सौन्दर्य सुंदरता, आकर्षणता और कोमलता है, जिस लड़की या स्त्री में सुंदरता नहीं होती उसका जीवन अपने- आप में अपूर्ण सा रहता है।

कुछ तो सौन्दर्य ईश्वर की तरफ से जन्मजात मिलता है, परंतु कुछ प्रयत्न ऐसे भी होते हैं, जिसके द्वारा सौन्दर्य प्राप्त किया जा सकता है, इस प्रकार के उदाहरणों से हमारा आयुर्वेद साहित्य भरा पड़ा है।

प्रत्येक बालिका यह चाहती है, कि वह आकर्षक बनी रहे, सारे शरीर से जवानी छलकती हुई सी अनुभव हो, चेहरे पर कुछ ऐसा आकर्षण हो कि व्यक्ति देखते ही ठक् सा रह जाए, और चेहरे से सुन्दरता के झरने झरते हुए से हों, जिससे कि उसका प्रभाव सामने वाले पर पड़ सके।

महाराजा समुद्रगुप्त के राज दरबार में रत्नावली एक अद्वितीय सौन्दर्यशालिनी थी, जिसकी एक झलक

पाने के लिए लोग बेताब रहते थे, सुंदर कानों तक खींची हुई आंखें, सुंदर आकर्षक गोरा शरीर और चेहरे पर एक अजीब सी मादकता ने उसे उस युग की सर्वश्रेष्ठ सौन्दर्यवती स्त्री बना दिया था, परंतु धीरे-धीरे उसका रूप ढलने लगा, तब तक उसकी लड़की प्रज्ञावती जवान हो गई थी, उसका सारा शरीर संतुलित सधा हुआ और यौवन की आभा से दीप्त था, परंतु उसमें एक ही कमी थी, कि उसका शरीर गोरा न होकर सांवले रंग का सा था, इस किंचित सांवलेपन को लेकर मां-बेटी दोनों ही चिन्तित थीं, गोरापन ही सौन्दर्य की पूर्णता कहलाता है, मां अपनी बेटी को भी वैसी ही सुंदर देखना चाहती थी, जैसी वह स्वयं थी, बेटी के इस सांवलेपन में आकर्षण नही रह गया था, जो कि होना चाहिए, तब दोनों एक दिन उस समय के प्रसिद्ध आयुर्वेद ज्ञाता भीषक के पास पहुंची, और उनसे निवेदन किया कि यदि किसी जड़ी-बूंटी या लेप से बेटी का सांवलापन गोरे रंग में परिवर्तित हो जाए तो मैं आपको सोने से तौल दूंगी।

भीषक ने कहा तुम्हारी बेटी के वजन के बराबर सोना अवश्य लूंगा, पर इसके पूरे शरीर का रंग गोरा और आकर्षक बना दूंगा, रत्नावली ने इतना मूल्य देने के लिए हामी भर ली तब भीषक ने एक लेप बनाकर

उसके शरीर पर लगा दिया, तीन बार के लेप से सांवलापन हमेशा के लिए मिट गया, चेहरे और पूरे शरीर का रंग गोरा, आकर्षक, तेजयुक्त और द्युतिमान बन जाने की वजह से बेटी अपनी मां से भी सुंदर और कामोत्तेजक बन कर पूरे दरबार में छा गई, इतिहास साक्षी है, कि प्रज्ञावती ने उस समय के शासक को अपनी उंगलियों पर नचाया, उस समय उससे अधिक सुंदर स्त्री दूसरी नहीं थी, उसकी एक झलक पाने के लिए राजा तक बेताब रहता था।

भीषक ने जो लेप बनाया वह इस प्रकार था, एक किलो तिल का तेल, आधा किलो कुलथी के बीजों का काढ़ा, २०० ग्राम कांजी, बारह तोला हिंगुलोथ, बारह तोला नीम्बू का रस, आठ तोला स्वांग शीतल, आठ तोला स्वर्ण माखी, चार तोला मुक्तक भस्म तथा चार तोला रस सिंदूर मिलाकर इसे **'डमरु यंत्र'** में पका कर लेप सा बना दिया और पूरे शरीर पर लेप से मालिश कर ली, दूसरे दिन सारा शरीर गर्म पानी से धोकर फिर इसी लेप से मालिश किया और इस प्रकार मात्र तीन दिन के प्रयोग से ही उसका पूरा शरीर अत्यधिक सुंदर-कुंदन के समान दमकते हुए गोरे रंग में परिवर्तित हो गया।

वस्तुतः शरीर के सांवलेपन को पूर्णतः गोरे रंग

में बदलने के लिए यह अद्वितीय और अमूल्य औषधि है, जिसकी कोई तुलना नहीं हो सकती।

सुंदरता का दूसरा मापदण्ड पूरा शरीर सांचे में ढला हुआ हो, जिसमें मुख्य रूप से पांच बिन्दु हैं- १. शरीर पर अनावश्यक बाल न हों, २. गर्दन पतली, पुष्ट, उभरी हुई व आकर्षक हो, ३. कमर अत्यधिक पतली और सुंदर एवं आकर्षक हों, जंघाएं पुष्ट हों और हाथी की सूंड की तरह ही ऊपर से नीचे तक अनुपात में हों।

भीषक का नाम उन दिनों आयुर्वेद के क्षेत्र में प्रसिद्ध था, सौन्दर्यमय बनाने के लिए उनके पास जैसे आयुर्वेदिक नुस्खे थे, उसकी कोई तुलना ही नहीं थी।

सम्राट समुद्रगुप्त एक राजपूत कन्या पर मुग्ध हो गए, परंतु उसका शरीर ऊपर लिखे नियमों के अनुसार अनुपातिक नहीं था, तब समुद्रगुप्त ने भीषक को अपने दरबार में बुलाकर अपनी प्रिय रानी के शरीर को अत्यधिक आकर्षक बनाने की सलाह पूछी, भीषक ने कहा, मैं मात्र दस दिनों में सौन्दर्य के माप दण्डों पर खरी उतरने वाली रानी बना दूंगा। मैं एक औषधि बनाकर देता हूं, उसका नित्य तीन बार सेवन गर्म पानी के साथ करना है, पर इन दस दिनों में रानी किसी प्रकार का कोई काम न करे,

और अधिकतर आराम करे।

महाराजा ने अपने गले में पड़ा हुआ अद्वितीय हीरों का हार भीषक के गले में डाल दिया, तीन दिनों के अन्दर-अन्दर भीषक ने अमूल्य औषधि बनाकर दी, और उसके सेवन से रानी हर्षदा उस युग की अद्वितीय सौन्दर्यवती स्त्री बन गई।

भीषक ने अपने संस्मरणों में उस औषधि का जिक्र किया है, जो इस प्रकार है -

बेल की जड़, अरिणी की जड़, अडूसा, की जड़, पाढ़ल की जड़, गम्भारी की जड़, बड़ी कटेरी की जड़, छाल परणी, पृष्ठ परणी, गोखरु की जड़, शंखाबली, कंधी की जड़, गज पीपर, भारंगी, कूठ, अपमार की जड़, चित्रक की जड़ और क्वाथ की जड़। इन सब को आठ-आठ तोला लेकर बत्तीस सेर पानी में उबालना चाहिए तथा इसमें दो सौ चौवन तोला जौ तथा एक सौ तोला बड़ी हरड़ एक पतले कपड़े की पोटली में बांधकर डाल देना चाहिए, इस पानी को औटाते-औटाते जब एक किलो पानी रह जाए तब उसे उतारकर छान लेना चाहिए और इसमें सोलह तोला घी में भुनी हुई हींग, चार तोला जौ गर्भ, सोलह तोला पीपर का चूर्ण, आठ तोला तमाल पत्र, आठ तोला इलायची और आठ तोला नाग केशर को

अच्छी तरह मिलाकर ठण्डा करना चाहिए, जब यह गाढ़ा हो जाए तब इसमें सोलह तोला शुद्ध शहद मिला देना चाहिए।

इस प्रकार जो औषधि तैयार हो, उसके तीस भाग कर लेने चाहिए, और दिन में तीन बार सुबह, दोपहर, शाम लेना चाहिए।

इसके प्रयोग से शरीर की फालतू चर्बी दूर हो जाती है, और सारा शरीर संतुलित आकर्षक तेजमय और अद्वितीय बन जाता है।

स्त्री के सौन्दर्य और आकर्षण का तीसरा मापदण्ड उसकी मधुर आवाज, आंखों का आकर्षण, होठों का रसीलापन, लम्बे बाल और उन्नत उरोज हैं, इसके लिए भीषक ने लिखा है, कि मनुष्यों पर शासन करने के लिए स्त्री में छः गुण होने चाहिए। जिसमें १. उसकी चाल, हंस के समान हो, २. उसकी जंघाएं केले की तरह चिकनी हों, ३. उसकी कमर सिंह की तरह पतली हो, ४. चेहरा चंद्रमा के समान शीतल, सौन्दर्ययुक्त एवं आकर्षक हो, ५. उसकी आंखें खंजन पक्षी की तरह बड़ी-बड़ी और अपने- आप में समेटने वाली हों तथा ६. आवाज वीणा की झंकार के समान मधुर तथा वक्ष स्थल नारियल के समान कठोर और आकर्षक हो।

इसके लिए भीषक ने अपने ग्रंथ में खाने के लिए महत्वपूर्ण औषधि का विवरण दिया है, जिसके प्रयोग से उपरोक्त विशेषताएं कुरूप स्त्री में भी आ सकती हैं, और वह आकर्षक तथा सौन्दर्यवान बनी रह सकती है।

सम्राट समुद्रगुप्त ने अपनी कन्या विद्युल्लता के लिए इस प्रकार की औषधि भीषक से बनवाई थी, और भीषक ने अपने ग्रंथ में इस औषधि का प्रामाणिक विवरण दिया है, जिससे किसी भी स्त्री में मात्र तीस दिन के सेवन से उपरोक्त विशेषताएं आ जाती हैं।

भीषक के अनुसार इस औषधि का प्रमाण इस प्रकार है -

१. सोमवली, २. अंशुमान, ३. रजत प्रभा, ४. अग्नि सोम, ५. तालब्रन्त, ६. श्वेताक्ष, ७. रहवत, ८. दूर्वा सोम, ९. प्रतानवान, १०. कालव्रन्त ११. जागत १२. सोंठ, १३. हरड़, १४. हरकुच, १५. हस्तिशुल्पी १६. हंसपदी, १७. हीराबोध, १८. मयूर शिख, १९. मगलिंगा, २०. महाबरी बच, २१ मानकन्द, २२. मुलेठी, २३. मूसाकानी, २४. मेथी और २५. मौल श्री।

इन सबको दस-दस तोला लेकर चौबीस किलो पानी में उबालें, जब पानी छः किलो रह जाए तब उसमें दस तोला सिपाम तथा १० तोला सालम मिश्री मिला दें,

उसके बाद जब वह जल डेढ़ किलो रह जाए, तब नीचे उतार कर मलमल के कपड़े से उसे छान लें और उस पानी में दाल चीनी १० तोला, तथा १० तोला निर्मली डालकर घोटें, और जब यह सब गाढ़ा हो जाए तब उसकी बराबर तीस गोलियां कर दें।

इन गोलियों को सफेद शीशी में भरकर रख दें और नित्य प्रातःकाल एक गोली का सेवन करें, दिन में बहुत हल्का भोजन करें, गरिष्ठ भोजन या तली हुई चीजों का सेवन न करें, थकावट का कार्य न करें तथा अधिकतर विश्राम की स्थिति में रहें।

धीरे-धीरे उसके शरीर में स्वतः एक विशेष आकर्षण पैदा होने लग जाता है, और पीछे के पृष्ठों में मैंने आकर्षक युवती की जो छः विशेषताएं बताई हैं, वे स्वतः उसमें प्राप्त हो जाती हैं, उसकी आवाज अत्यन्त मधुर और प्रभावपूर्ण बन जाती है।

समुद्रगुप्त ने उपरोक्त दवा का सेवन अपनी पुत्री विद्युल्लता से कराया, और तीस दिनों के बाद जब उसे देखा तो सम्राट स्वयं अचकचा कर रह गए, उसकी चाल, उसकी आवाज और उसका सारा शरीर एक अजीब सुगन्धयुक्त एवं मादकता से परिपूर्ण हो गया था।

इतिहास साक्षी है, कि समुद्रगुप्त ने उसी दिन

अपनी पुत्री के बराबर स्वर्ण मुद्राएं तोलकर भीषक को उपहार स्वरूप प्रदान कर दी थी, और अपने राज्य का प्रधान वैद्य नियुक्त किया था।

भीषक ने अपने जीवन के अनुभवों को एक पुस्तक में लिपिबद्ध किया था, जो हस्तलिखित अवस्था में प्राप्त है, मैंने स्वयं इन तीनों ही आयुर्वेदिक प्रयोगों को आजमाया है, और मैं यह कहने में सक्षम हूं, कि इसका प्रभाव अचूक और अद्वितीय होता है, आज के युग में भी ये प्रयोग उतने ही सफल एवं प्रभावयुक्त हैं, जितने समुद्रगुप्त के समय में थे।

इन तीनों ही प्रयोगों और भीषक के अन्य सभी प्रयोगों की प्रामाणिकता के लिए मैं चैलेन्ज देता हूं, कि कोई भी व्यक्ति आजमा ले, और उनके परिणाम अपनी आंखों से देख ले, वस्तुतः ये प्रयोग आयुर्वेद शास्त्र की महत्वपूर्ण निधि हैं, और इसके माध्यम से कुरूप स्त्री भी उर्वशी के समान सौन्दर्यमयी बनाई जा सकती है। अपने चिकित्सक की अनुमति से आप भी चाहें तो प्रयोग कर सकती हैं।

★★★

तिय मुख पर बेंदी लगे रूप सौ गुणौ होय

हिन्दू धर्म चाहे कितना ही जाति, वर्ग, रंग, भेद, शहरी-ग्रामीण आदि भागों में विभाजित हो गया हो, परंतु इन सबके बावजूद भी समस्त हिन्दू नारी के ललाट पर बिन्दी शोभायमान है, युगों-युगों से यह सौन्दर्य संस्कार की विभूति बनी हुई है।

भारतीय औरत चाहे कितना ही श्रृंगार कर ले, कंगन, कुण्डल, अंगूठी, चूड़ियां, काजल आदि लगा ले, परंतु बिना बिन्दी के उसका सारा श्रृंगार फीका और सूना सा हो जाता है, बिन्दी युक्त श्रृंगार ही नारी के रूप सौन्दर्य, कांति एवं शील को बढ़ाता है, पूरे संसार में

केवल भारतवर्ष में ही बिन्दी लगाने का प्रचलन है।

बिन्दी केवल श्रृंगार का ही आधार नहीं है, अपितु इसका रागात्मक सम्बन्ध भी है, इससे नारी में उच्चता और दिव्यता का आविर्भाव होता है, इसका आधार विश्वास और आस्था पर भी निर्भर है, यह नारी के सुहाग का भी प्रतीक है, और उससे अविच्छिन्न रूप से जुड़ा हुआ है।

भारतीय जीवन पिछले दो हजार वर्षों में कई बार बदला है, हम शकों, हूणों, यहूदियों, तुर्कों, अफगानों, मुगल और अंग्रेजों से हारे भी, जीते भी, परंतु इन सारे परिवर्तनों में भी यह बिन्दी नारी के ललाट पर स्थायी रूप से बनी रही है, अंग्रेजों के ३०० वर्षों के प्रभाव ने स्त्रियों के रहन-सहन को बहुत अधिक प्रभावित किया, लहंगे चुनरी की जगह पैंट - शर्ट आ गया, परंतु बिन्दी की महत्ता फिर भी ज्यों की त्यों बनी रही, चाहे भारतीय नारी कितनी ही आगे बढ़ जाए फिर भी वह लाल टिकुली के सौन्दर्य बोध को इन्कार नहीं कर सकती, आज हम देखते हैं, कि होटलों में चाहे रिसेप्शनिस्ट हो, चाहे वायुयान में एयर होस्टेस हों उनके ललाट पर भी बिंदी अवश्य ही दिखाई दे जाती है।

भारतीय नारी का सुहाग चिह्न के प्रति चिन्तन

स्पष्ट है, यह अच्छे या बुरे का प्रतीक चिन्ह नहीं है, यह तो उसके सामाजिक जीवन से जुड़ा हुआ चिन्ह है, और इसी से वह अपने- आपको समाज से जोड़ पाती है।

प्राचीन संस्कृत साहित्य में जितना विषद वर्णन बिन्दी का हुआ है, उतना शायद ही किसी अन्य श्रृंगार का हुआ हो, भक्ति युग के आचार्य वल्लभाचार्य ने भी अपने **'मधुराष्टकम'** में कृष्ण का वर्णन करते हुए कहा है -

गीतं मधुरं, पीतं मधुरँ, भुक्तं मधुरं, सुप्तं मुधुरं।
रूपं मधुरं, तिलकं मधुरं मधुराधिपते अखिलं मधुरं।

अर्थात् महायोगी कृष्ण का गान मधुर है, पान मधुर है, भोजन मधुर है, और तिलक मधुर है, मधुराधिपति का सब कुछ मधुर है।

स्त्रियां नहीं पुरुष भी

प्राचीन भारत में स्त्रियां ही नहीं अपितु पुरुष भी तिलक लगाते थे, घर में मांगलिक अवसर पर पुरुषों के तिलक लगाया जाता है, आज भी मंदिर के पुजारी, पण्डित अपने ललाट पर तिलक करते हैं, यह सौभाग्य, मंगल, विजय और रक्षा का प्रतीक चिन्ह है।

ललाट का वह स्थान, जहां बिन्दी लगाई जाती है, चुम्बकीय स्थल है यदि किसी व्यक्ति को सम्मोहित

करना होता है, तो सम्मोहन कर्त्ता अपनी दृष्टि ठीक उसी स्थान पर गड़ाता है, जहां बिंदी लगाई जाती है, जब व्यक्ति चिन्ता करता है, तो इसी स्थान पर सबसे अधिक जोर पड़ता है, और यहां की नसें खिंच जाती हैं, और माथा सिकुड़ जाता है।

अमेरिका के वैज्ञानिकों ने खोज की है, कि दोनों भौहों के बीच माथे की हड्डी में इस स्थान पर लौह ऑक्साइड बहुत अधिक होता है, इसलिए उसमें चुम्बकीय गुण सर्वाधिक होता है, जो स्त्रियां बिन्दी नहीं लगातीं, वे दूसरों के प्रति बिना हानि-लाभ का विचार किए जल्दी आकर्षित हो जाती हैं, यह स्थान लौह भण्डार है, अतः इस पर बिन्दी लगा देने से अन्य आंखें जब बिंदी के स्थान पर टिकती हैं तो वह स्वयं सम्मोहित हो जाता है।

सरल शब्दों में समझाया जाए तो यदि बिंदी लगी हुई हो तो व्यक्ति की आंखों से चुम्बकीय शक्ति जब इस स्थान से टकराती है तो उसकी किरणें परावर्तित होकर उसी की आंखों में समा जाती है, और वह सम्मोहक सा बन जाता है, किसी भी पुरुष को सम्मोहक बनाने के लिए लाल बिंदी सर्वाधिक उपयुक्त एवं सहायक है।

आज्ञा चक्र

योग के ग्रंथों में दोनों भौहों के मध्य स्थान को आज्ञा चक्र कहा है, आज्ञा चक्र जाग्रत होने से व्यक्ति पूरे ब्रह्माण्ड में घटित घटनाओं को ठीक उसी प्रकार से देख सकते हैं जिस प्रकार से हम टेलिविजन देखते हैं, शैव ग्रंथों में इसे 'तीसरी आंख' कहा गया है, यह संकल्प सिद्धि का बिंदु है।

भारतीय योग के अनुसार पूरे शरीर में बहत्तर हजार नाड़ियां हैं, इनमें भी इड़ा, पिंगला, और सुषुम्ना नाड़ी जीवन को व्यवस्थित करती है, और उसे भविष्य दृष्टा बना देती है, इस सुषुम्ना नाड़ी का मूल आधार दोनों भौहों के मध्य है जो कि पद्माकार चक्र है, जिसे हम आज्ञा चक्र कहते हैं, जीवन की व्यवस्था, संगति, उन्नति, पूर्णता, आनन्द, प्रसन्नता, और सफलता इसी चक्र के जागरण से सम्भव होती है।

योग ग्रंथों में लिखा है कि जिन लोगों के जीवन में आज्ञा चक्र जाग्रत नहीं होते उनमें 'विल' जैसी कोई शक्ति नहीं होती, वे दूसरों को प्रभावित नहीं कर पाते, दूसरों से काम नहीं ले पाते, दूसरों को आज्ञा नहीं दे पाते, और अन्य लोगों पर उनका नहीं के बराबर प्रभाव होता है।

बिन्दी लगाने से यह स्थान जाग्रत होने लगता है और धीरे-धीरे स्पन्दित होकर सक्रिय होने लगता है। यह एक बहुत बड़ी उपलब्धि है क्योंकि आज्ञा चक्र यदि सक्रिय हो जाता है तो पुरुष या नारी के जीवन में एक समग्रता, अखण्डता और पूर्णता आने लगती है, उसके व्यक्तित्व में एक विशेष सुगन्ध निस्रत होने लगती है, जो कि पूरे शरीर को चुम्बकीय और सम्मोहक बना देती है।

यह एक उच्च कोटि की प्रक्रिया है, मन नीचे के स्थान पर है, उसको आज्ञा चक्र की ओर बढ़ाने के लिए बिंदी लगाकर प्रवाह दिशा निर्धारित की जाती है, इससे शरीर के भीतर सारे चक्र जाग्रत होने लगते हैं, और चिन्तन बढ़ जाता है, ध्यान लगाकर व्यक्ति ब्रह्मानंद में खो जाता है।

रूस ने इस सम्बन्ध में बहुत खोज की है, और नवीनतम खोज के अनुसार उसका कहना है, कि बिन्दी लगाने से स्वतः अंदर की वृत्तियां और चक्र जाग्रत होने लगते हैं और उसका सारा शरीर स्वतः आकर्षण युक्त सौन्दर्यमय चुम्बकीय हो जाता है, इसके विपरीत जिनके ललाट पर बिंदी नहीं होती उनका जीवन अव्यवस्थित रहता है, तथा मानसिक संताप, ताप और वेग बढ़ते रहते हैं।

हमारे समस्त देवी - देवताओं के चित्रों में तिलक स्पष्ट किया गया है, भगवान शिव के ललाट पर तो पूरा का पूरा तीसरा नेत्र अंकित है, व्यक्ति की दोनों आंखें, गंगा-यमुना की प्रतीक हैं और बिंदी वाला स्थान सरस्वती का प्रतीक चिन्ह माना गया है, इन तीनों के मिलने से ही त्रिवेणी संगम बनता है।

योग में इस चक्र को जाग्रत करने के लिए कई उपाय बताए हैं, जिसमें बिंदी या तिलक भी एक उपाय है, बिंदी लगाने से यह स्थान अन्य स्थानों से कुछ पृथक हो जाता है, यह स्थान सारी वृत्तियों का केन्द्र बिंदु बन जाता है, और यह प्रवाहक केंद्र बिंदु बाहर से अंदर आने वाली बुरी प्रवृत्तियों को रोकता है तथा अंदर की शुभ प्रवृत्तियों को अग्रसर करता है, उसके जीवन में शांति, सुख और आनंद प्राप्त होता है, प्राणाग्नि प्रज्वलित होती है जो अज्ञान का अंत कर देती है, इसीलिए बिंदी का महत्व केवल सौन्दर्य की दृष्टि से ही नहीं, अपितु जीवन की पूर्णता के लिए भी अनिवार्य है।

प्राचीन शास्त्रों में भी कई प्रकार की बिन्दियों का विधान है, **लाल बिंदी** अंदर के चक्र जाग्रत कर सुख, सौभाग्य और पूर्णता देने में सहायक है, **हरी बिंदी** शीतलता और पवित्रता देती है, **पीली बिंदी** कामोत्तेजना

का आधार है तो **नीली बिंदी** से मन में निश्चिन्तता व्याप्त होती है, **कुंकुम का तिलक** सौभाग्य का प्रतीक है तो **केशर का तिलक** मन की वृत्तियों को पवित्र बनाता है।

वैज्ञानिक प्रयोगों से भी यह सिद्ध हुआ है कि सुंदर गोल, लाल बिंदी जीवन के आंतरिक उल्लास को तो प्रगट करती ही है, दूसरों को भी सम्मोहित कर उस पर वशीकरण कर देती है, यह बिंदी भी गोल, चौकोर, तिलक के आकार की, लम्बी, महीन, मोटी, कई रूपों में हो सकती है, बिंदी से ही मिलता-जुलता राजस्थानी और भारतीय नारियों में टीके का प्रचलन है, भारतीय स्त्रियो के टीके को, अर्थात् आज्ञा चक्र को उसके पति के साथ जोड़ दिया गया है।

इससे स्पष्ट होता है, कि आज्ञा चक्र को जिससे भी सम्बन्धित कर लिया जाता है, मन उसी अनुरूप बना रहता है, उसके विपरीत नहीं जाता, उसके प्रति अनुगत बना रहता है, चाहे वह ईश्वर हो, पति हो, या गुरु हो। इससे समर्पण भावना आती है, और वह टीका जिसका नाम लेकर पहिना जाता है, बार - बार उस टीके का दबाव आज्ञा चक्र पर पड़ता है फलस्वरूप आज्ञा चक्र जाग्रत होकर उसके प्रति अनुरक्त बन जाता है, यदि टीका

पहिनते समय प्रेमी का, पति का, गुरु का या ईश्वर का जिसका भी स्मरण किया जाता है, उसी के प्रति अनुरक्ति बढ़ती है, और उसका खिंचाव भी टीका पहिनने वाली सुंदरी के प्रति होता है।

तंत्र से भी सम्बन्ध

यों तो बिंदी अपनी लम्बी यात्रा में कई रूप, रंग, आकार लेती रही है, परंतु शाश्वत रंग लाल और आकार गोल ही रहा, लाल रंग उत्साह, ओज, समर्पण, उल्लास और जीवन ऊष्मा का प्रतीक है।

सौरपरिमण्डल का सीधा सम्बन्ध तंत्र से है, यह समस्त ब्रह्माण्ड का प्रतीक है, आज्ञा चक्र जब जाग्रत होता है, तो अपने ऊपर गोल आवृत्त के माध्यम से वह उस व्यक्तित्व को पूरे ब्रह्माण्ड से सम्बन्धित कर देता है, फलस्वरूप ब्रह्माण्ड की विशेषताएं उस व्यक्तित्व में आ जाती हैं।

गोरखनाथ के अनुसार लाल, गोल बिंदी लगाने से स्वतः तंत्र प्रक्रिया प्रारम्भ हो जाती है, यह सम्मोहन और आकर्षण तंत्र है, ऐसा होने पर जिसकी भी दृष्टि उस लाल बिंदी पर पड़ती है, उसकी आंखों में सम्मोहन स्वतः आ जाता है, और वह उसके प्रति आबद्ध अनुभव करता है।

वस्तुतः बिंदी जीवन का और तेजस्विता का प्रतीक है, यह उल्लास, उमंग और सौंदर्य का स्वरूप है, तंत्रमय बनकर दूसरों को सम्मोहित करने में समर्थ है, इसके माध्यम से शरीर में एक सुगंध प्रवाहित होने लगती है, जिससे कि सामने वाले पर जादू का सा असर होता है, यह ब्रह्म का प्रतीक है, और ईश्वर के प्रति अनुरक्ति का चिंन्ह है।

इसके माध्यम से पुरुष या स्त्री जीवन की पूर्णता को प्राप्त कर आनंद में लीन होते हैं, वस्तुतः बिंदी समस्त चक्रों के जागरण का जाज्वल्यमान स्वरूप है।

कामदेव रति साधना

oooooooooooooooooooo

oooooooooooooooo

oooooooo

यह कामदेव रति साधना परशुराम तंत्र से ली गई है, यह तांत्रिक ग्रंथ अपने-आप में ही अप्राप्य रहा है, सम्भवतः प्रामाणिक परशुराम तंत्र ग्रंथ की एक-आध हस्तलिखित प्रति ही नेपाल के पुस्तकालय में सुरक्षित है, जिसके ६४ पृष्ठ हैं, और प्रारम्भ के तीन पृष्ठ और अंत के पांच पृष्ठ लुप्त हैं।

परंतु जो कुछ बच गया है, वह बहुत ही अलौकिक और अद्वितीय है, इसी ग्रंथ में यह दुर्लभ साधना दी गई है जिसे मैं पत्रिका पाठकों के लिए प्रस्तुत कर रहा हूं --

पुरुष सौन्दर्य

जहां स्त्री सौन्दर्य की चर्चा होती है उसका वर्णन कई ग्रंथों में और पुस्तकों में मिल जाता है, परंतु **जितना महत्व नारी सौंदर्य का है, उतना ही महत्व पुरुष सौंदर्य का भी रहा है**, लम्बा, भरा पूरा कद, उन्नत ललाट, बड़ी-बड़ी दिव्य और तेजस्वी आंखें, उभरा हुआ वक्षस्थल, लम्बी भुजाएं, और इसके साथ ही साथ मजबूती, दृढ़ता, पौरुष, साहस, और खतरों से जूंझने की प्रवृत्ति रखने वाला ही असली पुरुष सौंदर्य कहलाता है, एक ऐसा सौंदर्य जो वास्तव में ही दर्शनीय है, एक ऐसा सौंदर्य जिसे देखते ही सुंदरियां ठगी सी खड़ी रह जाएं, एक ऐसा सौंदर्य जो वास्तव में ही शौर्य और साहस का प्रतिबिम्ब हो, ऐसा ही सौंदर्य कामदेव रति साधना से प्राप्त हो सकता है।

नारी सौन्दर्य

ईश्वर ने पुरुष और नारी का एक समन्वित स्वरूप बताया है, जहां जीवन में पुरुष सौन्दर्य की आवश्यकता है, वहीं नारी सौन्दर्य की भी एक मधुरता, प्रफुल्लता और दिव्यता है, दुबला - पतला किंतु मांसल शरीर, गोरा रंग, अण्डाकार चेहरा, उन्नत उरोज और

मुट्ठी में आने लायक कमर, एक ऐसा शरीर जो खिले हुए गुलाब के पुष्प की याद दिलाता हो, एक ऐसा गौरवर्णीय शरीर जिसकी चमक से पुरुष वर्ग ठगा सा खड़ा रह जाता है, एक ऐसे मधुर संगीत की तरह शरीर जिसके अहसास से ही जीवन में आनन्द की अनुभूति होती हो, ऐसे ही शरीर को स्त्री सौंदर्य कहा गया है, और ऐसा सौन्दर्य कामदेव रति साधना से ही प्राप्त हो सकता है।

आज के युग में मानसिक चिंताएं, तनाव, अत्यधिक धूम्रपान, शराब और अन्य कई कारणों से ऐसे उत्तम कोटि के सौन्दर्य देखने को नहीं मिलते, परंतु प्रत्येक पुरुष या स्त्री चाहती है, कि उसे अद्वितीय सौन्दर्य प्राप्त हो, उसके जीवन में मधुरता और आनन्द प्राप्त हो, और ऐसा सम्भव हो सकता है! परशुराम तंत्र इस बात का साक्षी है।

साधना -

इस साधना को कोई भी पुरुष या स्त्री, बालक या बालिका, वृद्ध या अशक्त कर सकता है, जो सौन्दर्य युक्त नहीं हैं, वे इस साधना को सम्पन्न कर अद्वितीय सौन्दर्य प्राप्त कर सकते हैं, जिनके पास सौन्दर्य है, वे इस साधना को सम्पन्न कर और भी धारदार सौन्दर्य

बना सकते हैं।

परशुराम तंत्र में स्पष्ट रूप से बताया गया है कि जो जीवन में सफलता, सम्मान, यश और प्रसिद्धि प्राप्त करना चाहते हैं, जो ऊंचा उठना चाहते हैं जो स्त्रियां पुरुषों पर शासन करने की आकांक्षा रखती हैं, उन सब को यह साधना अवश्य ही सम्पन्न करनी चाहिए।

साधना मुहूर्त

यह मात्र आठ दिन की साधना है, और नित्य एक घंटा इस साधना में व्यय करना पड़ता है, यह साधना दिन या रात्रि में कभी भी सम्पन्न की जा सकती है, इस साधना के लिए किसी विशेष मुहूर्त की आवश्यकता नहीं है, पर यह साधना किसी भी शुक्रवार को प्रारम्भ कर अगले शुक्रवार को समाप्त की जा सकती है।

साधना उपकरण

इस साधना को सम्पन्न करने के लिए लम्बे-चौड़े विधि-विधान या आडम्बर की आवश्यकता नहीं हैं, इस साधना को सम्पन्न करने के लिए मात्र **"कामदेव रति यंत्र"** की आवश्यकता होती है, जो कि अनंग मंत्र से सिद्ध और उर्वशी चेतना से प्राणसिक्त हो।

यह यंत्र पूरे जीवन भर के लिए उपयोगी है,

पर एक यंत्र से केवल एक पुरुष या एक स्त्री ही साधना कर सकती है, इस साधना को सम्पन्न करने के लिए इसके अलावा अन्य किसी पदार्थ की आवश्यकता नहीं है।

साधना रहस्य

शुक्रवार के दिन पुरुष स्नान कर शुद्ध सफेद वस्त्र धारण कर आसन पर बैठ जाए, और यदि स्त्री साधिका हो तो वह अपने बालों को धो कर पीठ पर फैला कर आसन पर बैठे, सामने किसी पात्र में कामदेव रति यंत्र स्थापित कर दे और सबसे पहले उस यंत्र को जल से स्नान करावे, फिर उसे पोंछ कर उस पर कुंकुम का तिलक लगावे, और सामने अगरबत्ती लगा दे, इसमें घी या तेल के दीपक का कोई विधान नहीं है।

इसके बाद गुलाब के पुष्प या अन्य पुष्पों से पूजन करे, इस पर ग्यारह पुष्प चढ़ाने का विधान है, प्रत्येक पुष्प चढ़ाते समय **"कामदेव रति क्रियाय नमः"** कह कर, एक-एक करके ग्यारह पुष्प चढ़ावे, और फिर इसी मंत्र से थोड़ा-थोड़ा जल भी चढ़ावे, फिर **दिव्य माला** से निम्न मंत्र की छः माला मंत्र जप करे, आप **दिव्य माला** कहीं से भी प्राप्त कर सकते हैं, यह माला जीवन भर आपके लिए उपयोगी रहेगी।

कामेदव रति मंत्र -

"ॐ कामायै रत्यै अनंगो वद आकर्षण सम्मोहन फट्"

मंत्र जप समाप्त होने पर माला को गले में धारण कर लें, और कामदेव रति यंत्र पर जो पुष्प चढ़ाए हैं, उनमें से कुछ पंखुड़ियां लेकर प्रसाद के रूप में ग्रहण करें और जो जल चढ़ाया हुआ है, उसे भी हाथ में लेकर छः बार थोड़ा-थोड़ा जल पी लें।

इस प्रकार आठ दिन तक करें, आठवें दिन साधना समाप्ति पर उस कामदेव यंत्र को अपने गले में या बांह पर अथवा कमर में धागे में पिरो कर पहन लें, और आगे के समय में भी धारण किए रहें, ऐसा करने पर वे स्वयं अपने शरीर में होने वाले परिवर्तन को अनुभव कर सकेंगे।

जीवन को पूर्णता तक ले जाने में समर्थ हैं ये प्रामाणिक पुस्तकें

पुस्तक	मूल्य
१. गुरु सूत्र	२०/-
२. निखिलेश्वरानन्द रहस्य	३०/-
३. मुहूर्त ज्योतिष	३०/-
४. हिमालय का सिद्ध योगी	३५/-
५. स्वर्ण तंत्रम्	३०/-
६. भौतिक सफलता साधना एवं सिद्धियां	३०/-
७. लक्ष्मी प्राप्ति के दुर्लभ प्रयोग	३०/-
८. महालक्ष्मी, सिद्धि एवं साधना	३०/-
९. विश्व की अलौकिक साधनाएं	३०/-

अपने निकटतम बुक स्टॉल से खरीदे

न मिलने पर लिखें

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान

डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज.)

फोन-०२९१-३२२०९